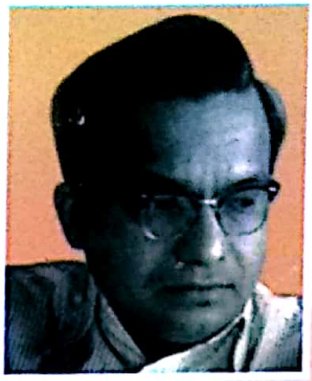

# भारत के अवतंस

पं. दीनदयाल उपाध्याय
श्री जगदीश चन्द्र माथुर


प्रधान संपादक
डॉ. विद्यावती जी. राजपूत

संपादक मंडल
श्री एस.ए. पाटिल
डॉ. रजिया बेगम शेख


Scanned by CamScanner

# श्री जगदीशचंद्र माथुर जी के एकांकी में सामाजिक चेतना

प्रो. श्रीमती पी. व्ही. गाडवी

श्री जगदीशचंद्र माथुर एक सफल एकांकीकार हैं। श्री माथुर ने 1936 ई. से ही एकांकी—रचना आरंभ कर दी थी। 'मेरी बाँसुरी', 'भोर का तारा', 'कलिंग-विजय', 'रीढ की हड्डी', 'मकड़ी का जाला', 'खंडहर', 'खिडकी की राह', 'घोंसले', 'कबूतर खाना', 'भाषण', 'ओ मेरे सपने', 'शारदीया' तथा 'बंदी' इस प्रकार लगभग चौदह एकांकियों की रचना कर श्री माथुर ने हिन्दी एकांकी के क्षेत्र को समृद्ध एवं सम्पन्न बनाया है तथा एकांकी—कला को प्रगति की ओर अग्रसर किया है।

विषय-वस्तु एवं दृष्टिकोण के विचार से सम्पूर्ण एकांकियें को तीन भागोंा में विभाजित कर सकते हैं—1.सामाजिक समस्या प्रधान, 2. ऐतिहासिक एवं सांस्कृति, 3. व्यंग्यात्मक एवं प्रहसन।

सामाजिक समस्या प्रधान एकांकी के अंतर्गत 'रीढ़ की हड्डी', 'मकड़ी का जाला', 'ओ मेरे सपने', 'बंदीं' आदि एकांकियाँ विशेष महत्त्व रखती है। प्रस्तुत एकांकियों में जीवन के सत्य को उजागर करने की क्षमता है। जिसमें जीवन की यथार्थ संवेदना को चित्रित किया है। माथुर जी ने इन एकांकियों में मुख्यतः वस्तुवाद, मिथ्या दिखावा, बाहयाडंबर, मध्यवग्र के उच्च स्तर की हृदयहीनता, व्यापारी वर्ग की भौतिकता, विद्यार्थी जीवन की झूइ फरेब, नैतिक क्षीणता, बैद्धिक उन्नति के साथ शिष्ट जीवन में आन्तरिक और सांस्कृतिक खोखलेपन बर व्यंग्य किया है। मध्यवर्ग उनकी आलोचना का केन्द्र है। अतः माथुर जी के एकांकी आधुनिक जगत् की नाना समस्याओं पर व्यंग्य करते हैं।

'रीढ की हड्डी' माथुर जी का सफल सामाजिका एकांकी है। वर्तमान स्थिति की वास्तविक समस्या का चित्रण इसमें हुआ है। स्त्रियों की बेबसी और सामाजिक स्थिति का इसमें सूक्ष्मता से अंकन किया है। लड़का-लड़की के भेदभाव का पर्दाफाश करना इस एकांकी का उद्देश्य है। उमा और शंकर की मनःस्थितियों का सजीव चित्रण इन एकांकियों में हुआ है। बेटी के पिता की विवशता और बेटे के पिता का झूठा अहं अत्यंत मार्मिकता से चित्रित है। विवाह पूर्व लड़की की परीक्षा लेना और लड़के के लिए काफी छूट देना



Scanned by CamScanner

इस विसंगतियों पर माथुरजी ने तीखा प्रहार किया है। अतः इस एकांकी के द्वारा माथुर जी ने भारतीय समाज में व्याप्त कुप्रथा का चित्रण करते हुए लड़की को भी अपनी रुचि प्रकट करने के अधिकार प्राप्त होने का संकेत दिया है। यह संकेत ही एक सामाजिक चेतना है। समाज में इस कुप्रथा के विरोध में आवाज उठाने का बल स्त्री-वर्ग में पिरोने का काम इस एकांकी में दर्शाया है, जो सामाजिक परिवर्तन का संकेत है। एतएव वधु-परिक्षा सम्बन्धी एकाधिकार की पद्धति को अमान्य ठहराते हुए यह संकेत दिया है कि नारी जब तक अधिकारों के लिए सजग नहीं हो जाती, तब तक अत्याचार की चक्की में उसे पीसना ही पड़ेगा।

'मकड़ी का जाला' एकांकी भी सामाजिक एकांकियों में से एक महत्त्वपूर्ण एकांकी है। इसमें यह बताया है कि मनुष्य को जीवन संघर्ष करते हुए कई कठिनाइयों का समाना करना पड़ता है। कभी-कभी अनुभूतियों का दमन करना पड़ता है। किंतु अवकाश प्राप्त होते ही अनजाने स्वप्न के रूप में वे प्रस्तुत होते हैं। चन्द्रभान नामक युवा पात्र के द्वारा एक स्वच्छन्द एवं स्वाधीनचेता नवयुवक को भी जीवन के लिए मजबूर होकर महाजनी सभ्यता की लोह शृंखलाओं में बँधना पड़ता है। इसे सफलता से दर्शाया है तो भोलानाि के माध्यम से यह दिखाया है कि जीवन संग्राम में विजयी होने के लिए मनुष्य को अपनी मधुर अनुभूतियों एवं अनुराग-भावनाओं का दमन अवश्य करना पड़ता है। परन्तु बाहर से निर्मम एवं निष्ठुर बने रहने पर भी वे विस्मृत रागात्मक मनोवृत्तियाँ मानव के अवचेतन में घर कर लेती हैं तथा अवसर आने पर स्वप्न के रूप में या अर्द्धचेतन अवस्था में फिर जाग्रत जाती है।

'ओ मेरे सपने' नामक सामाजिक एकांकी में अधुनिक युवकों की मनोवृत्तियोां पर व्यंग्य करने के लिए तीन पात्र चुने हैं—सूरजभान, मगनचन्द्र और गोपीनाथ यह तीनों युवा पात्र फिल्मी जगत की रंगीन सपनों में अभिनेता एवं अभिनेत्रियोां की नकल करते हुए इतने मशगूल हैं कि जिन्हें जीवन की यथार्थता का तनिक भी बोध नहीं है जीवन की वास्तविकता को स्वीकार करने की हिम्मत भी नहीं फिल्मी दुनिया का इतना प्रभाव इनके जीवन पर है कि इनके जीवन की गति ही बदल गई है जो चारित्रिक पतन के साथ-साथ समाज का कलंक बन रही है। अतः इस एकांकी के द्वारा माथुर जी यह स्पष्ट करना चाहतो हौं कि आज की युवा-पीढ़ी कैसे दर-बदर भटकती जा रही है। जिन्हें बिल्कुल ही अपने सामाजिक दायित्व का एहसास नहीं जिनकी अपनी कोई पहचान नहीं।

श्री माथुर ने 'बंदी' एकांकी में हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज साहब, उनकी पुत्री हेमलता और हेमलता का मित्र वीरेन नामक तीन पात्रों को लेकर शहर के उन लोगों का चरित्र-चित्रण किया है, जो गाँव से आकर्षित होकर उसकी ओर भाग कर तो आते है, परन्तु ग्रामीण जीवन के साथ एकरस नहीं हो पाते। इस एकांकी के विषय-वस्तु से यह



Scanned by CamScanner

स्पष्ट किया है कि जब तक शहर के लोग गाँव में आकर गाँव के जीवन के साथ एकरस नहीं हो-जाते और गाँव वालों के लिए बीराने बने रहते हैं, तब तक वे न तो गाँव की धरती की गंध पा सकते हैं, न धरती का स्पर्श ग्रहण कर सकते है और न ग्राम-सुधार आदि कार्यों द्वारा वहाँ जन-जागरण का कार्य ही कर सकते हैं। अतः ग्राम और शहर के वातावरण का फासला बढ़ता ही जाता है मनुष्य की दूरियाँ निरंतर बढती जा रही है जिससे उनके मन का अन्तर्द्वंद्व किसी निश्चित दिशा में तय नहीं हो पाता। उन्हें सही दिशा में जाने के लिए प्रवृत्त नहीं करता।

अतः विवेचित इन चार सामाजिक एकांकियों की रचनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि श्री जगदीशचंद्र माथुर ने कवेल आत्माभिव्यक्ति के लिए एकांकियों को लेखन नहीं किया अपितु उन्होंने समाज को उचित दिशा देने के लिए, जीवन को समुन्नत बनाने के लिए तथा समाज की विषमताओं एवं विद्रूपताओं का उद्‌घाटन करने के लिए एकांकियों का निर्माण किया है। अतः उनकी एकांकियाँ जीवन की यथार्थ संवेदना को चित्रित करती है। तथा समाज के भीतर के बदलते रिश्तों और मानवीय संबंधों का यथार्था चित्रण किया है। प्रत्येक एकांकी से उन्होंने सामाजिक चेतना का अविष्कार किया है। अतः यथार्थवाद को आधार बनाकर ही सामाज एवं जीवन की विविध समस्याओं के साथ-साथ जीवन के विविध पहलुओं का यथार्थ चित्रण करके सामाजिक चेतना को जगाना माथुर जी की एकांकियों का मूल उद्देश्य है।

## संदर्भ ग्रंथ


1. एकांकी और एकांकीकार, रामचरण महेन्द्र
2. हिन्दी के प्रतिनिधिा एकांकीकार, डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
3. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास, बाबू गुलाब राय



*हिन्दी विभागाध्यक्षा*
*एस.एस आर्टस अॅन्ड टी.पी.*
*सायन्य कॉलेज, संकेश्वर-591 313*
*मो. नं. 8618387545, 8951835432*


Scanned by CamScanner